मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

कार्यालय-कार्यालय भटके लखानी के श्रमिक, नतीजा वही ढाक के तीन पात.... 2
गदपुरी टोल अवैध: हाईकोर्ट कमीशन, फिर भी लूट रहेगी जारी 4
महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह को भारत सरकार ने कभी सम्मानित नहीं किया 5
शिकागो के अमर शहीदों को लाल सलाम 6
सैनिक कॉलोनी में सीवर लाईन डालने के नाम पर डकार लिए करोड़ो रुपए 8

वर्ष 37 | अंक 39 | फरीदाबाद | 30 अप्रैल-6 मई 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

बड़ी उपलब्धि : ईएसआई मेडिकल कॉलेज टीम ने कटे हुए हाथ को जोड़ा

डीन डॉ. असीम दास

चिकित्सा अधीक्षक
डॉ. अनिल कुमार पांडे

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) एक के बाद एक उपलब्धि प्राप्त करते हुए एनएच तीन स्थित ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल ने बीते सप्ताह एक और बड़ा करिश्मा कर दिखाया। एसजीएम नगर निवासी अभय भूषण सिंह जो पलवल की एक फैक्ट्री में काम करते हैं, का दाहिना बाजू मशीन की चपेट में आकर कलाई और कोहनी के बीच से कटकर दूर जा गिरा था। प्रबंधन ने बजाय अपने हाथ पैर फुलाने के सूझबूझ से काम लेते हुए अभय भूषण को तुरंत मेडिकल कॉलेज भेजने का प्रबंध किया। उसके कटे हुए हाथ को अलग से बर्फ में लगाकर पॉलिथीन में पैक कर अस्पताल भिजवाया।

पलवल से रवाना होते ही प्रबंधन ने अस्पताल वालों को घटना की सूचना दे दी थी। इसका लाभ उठाकर अस्पताल प्रबंधन ने भी अपनी कमर कस ली थी। लिहाज़ा दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के अस्पताल पहुंचते ही बिना कोई समय गंवाए पहले से ही तैयार ऑपरेशन थियेटर में ऑपरेशन शुरू कर दिया गया। सबसे पहले हड्डी विशेषज्ञ एवं एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. ब्रजेश ने अपनी उच्चतम दक्षता का परिचय देते हुए रॉड की सहायता से हाथ की हड्डी को जोड़ दिया। उसके बाद दूसरे डॉक्टरों ने बारी बारी से अपनी अपनी कार्रवाई शुरू की। डॉक्टर डॉ. भूपेंद्र ने रक्त नलिकाओं को जोड़ा और टेंडन जोडे, डॉ. अखिल गर्ग ने तंत्रिकाओं (नर्व्स) को जोड़ा। संदर्भवश सुधी पाठक समझ लें कि जिस तरह रक्त नलिकाओं में रक्त का संचार होता है उसी तरह तंत्रिकाओं के द्वारा दिमाग से अंग तक और अंग से दिमाग तक संदेश का आदान प्रदान होता है। उसके बाद प्लास्टिक सर्जन ने अपनी कुशलता का परिचय देते हुए शरीर के विभिन्न भागों से मांस एवं चमड़ी आदि लेकर कटी हुए जगह की सर्जरी कर चमड़ी को जोड़ा।

छह विभिन्न डॉक्टरों के साथ ही दसियों पैरामेडिकल स्टाफ को यह काम पूरा करने में करीब दस घंटे का समय लग गया। इन डॉक्टरों में एनिस्थीसिया के डॉक्टर का काम भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। दस घंटे की कड़ी मेहनत के बाद उस वक्त डॉक्टरों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा जब मरीज के हाथ में होने वाली हरकत ने ऑपरेशन की सफलता का सुबूत पेश किया। इस मौके पर मरीज की पत्नी सबसे अधिक संतुष्ट एवं खुश नजर आई और उन्होंने डॉक्टरों का बहुत बहुत शुक्रिया अदा किया। निसंदेह यदि यह अस्पताल न होता तो गरीब मजदूर का हाथ जुड़ने वाला नहीं था।

मज़दूर मोर्चा के सुधी पाठक पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं कि बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन के 31, बिना चीरे के हृदय के वाल्व बदलने के पांच बड़े केस तथा हृदय की धमनियों में स्टेंट डालने, एंजियोग्राफी करने एवं इसी तरह के दो हजार से अधिक सफल इलाज इस अस्पताल में हो चुके हैं। समझने वाली बात यह है कि इस तरह की उपलब्धियां किसी भी गैर शैक्षणिक अस्पताल में संभव नहीं हो सकतीं, यानी कि मेडिकल कॉलेज के अस्पताल मे ही इस तरह के करिश्मे संभव हो सकते हैं और वह भी तब जब वहां के डीन, चिकित्सा अधीक्षक अपने यहां कार्यरत फैकल्टी को काम करने के लिए न केवल प्रोत्साहित करें बल्कि एक उचित माहौल देने के साथ-साथ हर तरह के आवश्यक साजो सामान की आपूर्ति करें।

डा. बृजेश

डा. भूपेन्द्र

डा. अखिल गर्ग

इस तरह के ऑपरेशन में बड़े बड़े चिकित्सा उपकरणों से लेकर महीन से महीन सुई धागे जैसे सैकड़ों चीजों की जरूरत पड़ती है जो प्राय: सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध नहीं होते। हर तरह के साजो सामान तथा प्रतिभाशाली डॉक्टरों की टीम को एक साथ जोड़कर प्रेरित करने के लिए डॉक्टर अनिल पांडेय जैसे चिकित्सा अधीक्षक तथा डॉ. असीमदास जैसे डीन का होना सफलता का परिचायक है। हरियाणा के किसी भी सरकारी अस्पताल की बात तो छोड़िए प्राइवेट अस्पताल में भी इस तरह का यह पहला कामयाब उदाहरण है। इसी तरह का केस यदि ईएसआई के दिल्ली स्थित बसई दारापुर मेडिकल कॉलेज में आया होता तो वे उसे हाथ भी न लगाते और दूर से ही भगा देते।

यहां होने वाली उपलब्धियां कॉरपोरेशन में बैठे उन अफसरों के मुंह पर तमाचा है जो मेडिकल कॉलेज का सदैव विरोध करते रहे। विदित है कि यह मेडिकल कॉलेज कॉरपोरेशन में बैठे विरोधियों के कड़े विरोध के बावजूद बड़ी मुश्किल से चालू हो पाया था।

संस्थान को अब बड़ी चुनौतियों के लिए होना होगा तैयार

औद्योगिक क्षेत्र में उंगली, पैर, हाथ आदि अंग कटने की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं, न केवल कारखानों में बल्कि सड़कों पर भी। पहले इस तरह के मामलों में लोग दिल्ली की ओर भागा करते थे लेकिन अब मेडिकल कॉलेज का करिश्मा देख कर कोई भी ईएसआई कवर्ड दिल्ली की ओर न जाकर इसी संस्थान की ओर लपकेगा।

इस तरह के बढ़ते केसों से निपटने के लिए इस संस्थान में कोई विशेष प्रबंध नहीं है। इस मौजूदा मामले में, एक तो दिन का समय था, दूसरे पूर्व सूचना मिल गई थी, तमाम डॉक्टर अपने-अपने काम छोड़कर इस महत्वपूर्ण काम में जुट गए। लेकिन यह हमेशा तो संभव नहीं हो सकता। इसके लिए यहां पर एक स्थायी ट्रॉमा सेंटर बनाने की सख्त जरूरत है। जिसमें तमाम तरह के डॉक्टरों व पैरा मेडिकल की टीम हर समय तैयार रहे। फिलहाल यहां पर दो न्यूरो सर्जन और दो प्लास्टिक सर्जन सप्ताह में केवल चार दिन तीन-तीन घंटे के लिए आते हैं। हालाकि मेडिकल कॉलेज को तीन-तीन फुल टाइमर न्यूरो सर्जन व प्लास्टिक सर्जन की जरूरत है। यह अति आवश्यक है कि इस तरह के विशेषज्ञ डॉक्टरों को आवश्यकता के अनुरूप स्थायी रूप से भर्ती किया जाए।